कोविड काल के पश्चात विद्यालय खुलने पर विद्यार्थियों हेतु शैक्षिक अनुसमर्थन कार्यक्रम 2020–21

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उत्तराखण्ड
State Council of Educational Research and Training, Uttarakhand
Tapovan Road, Nalapani, Dehradun
Phone: 0135-2789655 Fax: 0135-2789656, Website: www.scert.uk.gov.in
E-mail: scertuk@gmail.com, scert_ua@rediffmail.com

कोविड काल के पश्चात विद्यालय खुलने पर विद्यार्थियों हेतु शैक्षिक अनुसमर्थन कार्यक्रम 2020–21

COVID-19 के चलते सुरक्षात्मक कारणों से राज्य में स्कूल मार्च 2020 के द्वितीय सप्ताह से बन्द हैं। छात्र तथा अध्यापक घरों से रहकर ही सीखने–सिखाने की प्रक्रिया सम्पन्न की गई। स्कूलों के बन्द होने के कारण पाठ्यक्रम के अनुरूप सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में बाधाएँ आ रही हैं। स्कूल के साथ–साथ घर, परिवेश, आस–पास के वातावरण व अनुभवों से छात्रों के सीखने की प्रक्रिया सतत चलती रहती है।

कोरोना महामारी के दौरान स्कूलों में सीखने–सिखाने की प्रक्रिया जो औपचारिक, प्रत्यक्ष, शिक्षक–छात्र अंतःक्रिया के रूप में थी, वह आवश्यकतानुसार विभिन्न वैकल्पिक तरीकों से सम्पन्न हो रही है, यथा ऑनलाइन, मोबाइल, रेडियो, टी.वी., पाठ्यपुस्तक, अभिभावकों का निर्देशन आदि। विभिन्न हितधारक राज्य में अलग–अलग माध्यमों व तरीकों से छात्रों को शिक्षा के अवसर उपलब्ध कराने हेतु प्रयास किये गये हैं।

इन वैकल्पिक माध्यमों व तरीकों द्वारा सभी छात्रों के लिए समान गुणवत्ता की शिक्षा सुनिश्चित करने में बाधाएँ भी हैं। यथा समय, तकनीकी संसाधनों की उपलब्धता, घर में समुचित अनुसमर्थन न मिल पाना आदि। परिणाम–स्वरूप छात्रों के लर्निंग आउटकम्स की प्राप्ति के साथ सीखने में कमी का खतरा है।

छात्रों में लॉकडाउन के दौरान व बाद में छात्रों के सीखने सम्बन्धी कमियों व हानियों (Learning gaps व losses) को ध्यान में रखकर राज्य में COVID-19 महामारी के चुनौतीपूर्ण काल हेतु " Students Learning Enhancement Plan " विकसित कर लागू किया गया है। विद्यालय खुलने की दशा में विद्यार्थियों की सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में रह गई कमियों को दूर किया जाना है तथा प्रत्येक बच्चे को कक्षा स्तर के अनुसार उपलब्धियों हेतु अनुसमर्थन दिया जाना है इसके लिए विद्यालय स्तर पर विद्यार्थियों को सक्रिया अनुसमर्थन देने हेतु निम्नवत कार्यक्रम प्रस्तावित किया जा रहा है–

अ– कोविड–19 से संक्रमण से रोकथाम हेतु मानक संचालन प्रक्रिया

ब– सीखने–सिखाने हेतु रणनीतियाँ

स– फॉलोअप एवं अकादमिक अनुसमर्थन

अ– कोविड–19 से संक्रमण से रोकथाम हेतु मानक संचालन प्रक्रिया

- विद्यालय खुलने पर शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों का कोविड–19 के संक्रमण से बचाव हेतु सम्बन्धित दिशा–निर्देशों पर अभिमुखीकरण किया जाएगा, जिसमें विद्यालय स्तर पर समस्त बचाव सम्बन्धी उपायों को सार रूप में विद्यालय में बोर्ड/चार्ट इत्यादि के माध्यम से प्रदर्शित किया जाएगा।
- उपरोक्त बचाव सम्बन्धी उपायों पर छात्रों में जागरूकता की अभिवृद्धि हेतु विभिन्न गतिविधियाँ आवश्यकतानुसार आयोजित की जाएगी।
- विद्यालय में कोविड–19 के संक्रमण से बचाव हेतु समस्त आवश्यक सामग्री यथा साबुन, सैनिटाइजर, मास्क इत्यादि की विद्यालय में उपलब्धता को सुनिश्चित किया जाएगा।

ब– सुधारात्मक/उपचारात्मक/संवर्धनात्मक शिक्षण हेतु सीखने–सिखाने हेतु रणनीतियाँ–

- एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली द्वारा विकसित तथा विद्यालयी शिक्षा उत्तराखण्ड द्वारा शिक्षकों से साझा किये गये Altenative Academic Calendar में कक्षावार–विषयवार दिये गये संबोधों/LOs पर आधारित आकलन विद्यालय स्तर पर किया जाएगा ताकि शिक्षक छात्र की प्रगति एवं Learning gap से विज्ञ हो सके।
- चिहिन्त Learning Gaps को शिक्षक द्वारा शिक्षक डायरी में सूचीबद्ध (कक्षावार/विषयवार) किया जाएगा। तथा छात्रों को उक्त संबोधों पर पुनरावृत्ति कराई जाएगी। पुनरावृत्ति कराने में शिक्षक Peer group Learning, Demonstration, Experential Learning को अपनाया जा सकता है। सुधारात्मक/उपचारात्मक/संवर्धनात्मक शिक्षण यह कार्यक्रम 15 दिन का होगा।
- चिहिन्त कठिन स्थलों (Hard Spots) पर सम्बन्धित जनपद के डायट द्वारा आदर्श पाठ योजना/रणनीति विद्यालयों के साथ साझा कर उन्हें अकादमिक अनुसमर्थन प्रदान किया जाएगा।
- ऐसे छात्र जो पुनरावृत्ति के पश्चात भी अपेक्षित स्तर प्राप्त नहीं कर पाए हैं, उनके लिये शिक्षक द्वारा प्रतिदिन एक वादन में Remedial Teaching की जाएगी।

- चिहिन्न कठिन स्थलों (Hard Spots) को शिक्षक/प्रधानाचार्य द्वारा डायट को उपलब्ध कराया जाएगा।
- छात्रों के लिए शिक्षक Self Study Session होगा, जिससे छात्र संबोध पढ़कर प्रश्नों के उत्तर देगें।
- **जिन विद्यार्थियों के पास स्मार्टफ़ोन है, उन्हें शिक्षंक सम्बोधों से सम्बंधित विडियो एवं अन्य ई-सामग्री प्रेषित करेंगे तथा ज्ञानदीप एवं स्वयंप्रभा चैनल पर प्रसारित शैक्षिक कार्यक्रमों के विषय में विद्यार्थियों को अवगत कराकर विद्यालय में इन पर चर्चा करेंगे ।**

कठिन स्थलों के आकलन हेतु सुझाव–

- अवधारणात्मक लर्निंग आउटकम्स को चिन्हित करना।
- लर्निंग आउटकम्स के आधार पर प्रश्न बनाना व प्रश्न के साथ ही उससे सम्बन्धित लर्निंग आउटकम्स लिखकर अभिलेखित रखना।
- प्रश्नों को बोधात्मक, कौशलात्मक व अनुप्रयोगात्मक आधार पर बनाना।
- विद्यार्थियों को यथा सम्भव विचार व्यक्त करने का समय देना।
- प्रश्नों को वस्तुनिष्ठ व लधुउत्तरीय रखा जाना उचित होगा।
- परीक्षण के उपरान्त प्रत्येक विद्यार्थी की लर्निंग आउटकम्स के अनुसार उपलब्धि को अभिलेखित करना।
- ऐसे लर्निंग आउटकम्स को चिन्हित करना जिन पर औसत उपलब्धि न्यून है।
- विद्यार्थीवार न्यून लर्निंग आउटकम्स की न्यून उपलब्धि को अंकित करना।

<u>निर्धारित दक्षताओं को प्राप्त करने के लिए शिक्षण प्रारूप</u>

1. संबोध का नाम–
2. अपेक्षित सीखने के प्रतिफल–
3. संबोध से सम्बन्धित अवधारणात्मक पूर्व ज्ञान को पुनःस्मरण करवाना तथा नयी विषय वस्तु को पूर्व ज्ञान से जोड़ना।
4. त्रुटि विश्लेषण– कक्षा–कक्ष के अनुभव के आधार पर।

- सम्भावित त्रुटियाँ– पाठ योजना को बनाते समय पूर्व अनुभवों के आधार पर उन सम्भावित त्रुटियों को सूचीबद्ध करना जिन से अपेक्षित सीखने के प्रतिफल को प्राप्त करने में कमी रह सकती है।
- सम्भावित समाधान– सम्भावित त्रुटियों का सम्भावित हल क्या हो सकते हैं सुचीबद्ध करना ताकि आवश्यकता पड़ने पर उपयोग कर सके।

5. शिक्षण विधियाँ– शिक्षण उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए तरीके को सूचीवद्ध करना।
6. आकलन की रणनीतियाँ–

- शिक्षण प्रक्रिया के दौरान आकलन जिनमें लिखित, मौखिक व वस्तुनिष्ठ (Objective) आकलन के तरीके अपनाये जा सकते हैं।
- विषयवस्तु के पूर्ण करने के बाद आकलन
- साप्ताहिक आकलन
- मासिक आकलन

7. सीखने के सम्भावित प्रतिफल आधारित न्यूनतम पाँच विभिन्न प्रकार के प्रश्न– विभिन्न प्रकार के प्रश्न निम्नलिखित बनाए जा सकते हैं जो कि बोधात्मक, ज्ञानात्मक, कौशलात्मक, अनुप्रयोगात्मक तथा विश्लेषणात्मक आधारित होंगे ।

उक्त प्रारूप पर शिक्षण योजना बनाने से शिक्षण प्रक्रिया के दौरान शिक्षक द्वारा बच्चों के आकलन के साथ–साथ स्वयं का आकलन भी करेगा कि जो बच्चे अपेक्षित दक्षताओं को प्राप्त नहीं कर पा रहे हैं उनके लिए किस तरह से शिक्षण प्रविधि/प्रक्रिया को बदल दिया जाए कि अपेक्षित दक्षताओं की प्राप्ति हो सके।

शिक्षक, डायरी में निम्न प्रारूप को भरकर प्रत्येक सप्ताह अंकना कर प्रधानाचार्य से अवलोकन करायेगें।

कक्षा– **विषय–**

संबोध	सीखने का प्रतिफल	विद्यार्थियों की प्रतिशत उपलब्धि

- उक्त प्रारूप में प्रत्येक संबोध एव उससे जुडे अवधारणात्मक लर्निंग आउटकम्स पर विशिष्ट ध्यान दिया जाए व इसे अंकित किया जाए। लर्निंग आउटकम्स के अनुसार प्रश्न बनाये जाऐं व प्रत्येक लर्निंग आउटकम्स पर उपलब्धी देखकर विद्यार्थियों की औसत उपलब्धि अंकित की जाए। सुधारात्मक/उपचारात्मक/संवर्धनात्मक शिक्षण के 15 दिन बाद अन्तिम परीक्षण किया जायेगा। अन्तिम परीक्षण के पश्चात जिन संबोधों/लर्निंग आउटकम्स पर भी उपलब्धि सन्तोषजनक नहीं पायी जाती है उन पर प्रत्येक दिन एक अतिरिक्त वादन में अध्यापक समय सारणी बनाकर शिक्षण कार्य करेंगे। अन्तिम परीक्षण के उपरान्त प्रत्येक विद्यार्थी की लर्निंग आउटकम्स के अनुसार उपलब्धि को अभिलेखित की जाएगी।
- ऐसे लर्निंग आउटकम्स को चिन्हित करना जिन पर सुधारात्मक/उपचारात्मक/संवर्धनात्मक शिक्षण के पश्चात भी औसत उपलब्धि न्यून है।
- सुधारात्मक/उपचारात्मक/संवर्धनात्मक शिक्षण के पश्चात विद्यार्थीवार न्यून लर्निंग आउट कम्स की न्यून उपलब्धि को अंकित करना।
- जिन लर्निंग आउटकम्स में उपलब्धियाँ कम पाई गई हैं उन पर विद्यालय में प्रत्येक कक्षा हेतु प्रतिदिन एक वादन निर्धारित कर शिक्षण कर विद्यार्थी उपलब्धि बढाने का प्रयास किया जायगा।
- कक्षावार एवं विषयवार न्यून उपलब्धि वाले लर्निंग आउटकम्स की सूची उप शिक्षा अधिकारी एवं खण्ड शिक्षा अधिकारी के माध्यम से डायट को प्रेषित की जाएगी जिस पर डायट कार्ययोजना बनाकर सुधार के उपाय करने में सहयोग करेंगी।
- **विद्यालय खुलने के एक माह पश्चात् जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान कक्षावार एवं विषयवार लर्निंग गैप्स के चिह्नीकरण हेतु एक सर्वे निम्नलिखित विवरण अनुसार आयोजित करेगा-**

कक्षा	विषय	सर्वे प्रपत्र में प्रश्नों की संख्या	विकासखंड में विद्यालयों की संख्या
1 से 5	हिंदी, अंग्रेजी, गणित	45 (3X15)	10
6 से 8	हिंदी, अंग्रेजी, गणित, विज्ञान	60 (4X15)	10
9 से 10	अंग्रेजी, गणित, विज्ञान	60 (3X20)	10

- कक्षा 11 एवं 12 के समस्त विषयों में सम्बंधित प्रवक्ता छात्रों की उपलब्धि का आकलन एवं लर्निंग गैप्स को चिह्नित करेंगे ।
- जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान द्वारा सर्वेक्षण के पश्चात् कक्षावार एवं विषयवार चिह्नित किये गए लर्निंग गैप्स एवं रिपोर्ट को एस.सी.ई.आर.टी उत्तराखंड के साथ साझा किया जायेगा ।
- जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान द्वारा Early Reading and Early Maths कार्यक्रम से प्राप्त परिणामो का संज्ञान लेकर अधिगम संवर्धन (Learning Enhancement) हेतु लघुकालिक एवं आगामी वर्ष हेतु रणनीति बनायीं जाएगी ।

दायित्व-

विकासखंड स्तर-

- कार्यक्रम का प्रत्येक विद्यालय में क्रियान्वयन सुनिश्चित करना ।
- विकासखंड में कक्षावार एवं विषयवार लर्निंग गैप्स का चिह्नीकरण सुनिश्चित करना एवं डायट को रिपोर्ट प्रेषित करना ।
- विद्यालयों का स्थलीय निरीक्षण एवं सप्ताह में न्यूनतम 10 विद्यालयों से दूरभाष से संपर्क करना ।

जनपद स्तर-

- विकासखंड से प्रगति प्राप्त करना एवं डायट के साथ लर्निंग गैप्स के निवारण हेतु संसाधन उपलब्ध कराना ।
- कार्यक्रम के क्रियान्वयन हेतु विद्यालयों का निरीक्षण करना ।

डायट स्तर-

- कार्यक्रम के सफल संचालन हेतु विकासखंड स्तर पर मेंटर नियुक्त करना ।
- जनपद में कक्षावार एवं विषयवार लर्निंग गैप्स का चिह्नीकरण।
- सैंपल सर्वे का आयोजन कर रिपोर्ट एस.सी.ई.आर.टी को प्रेषित करना।

एस.सी.ई.आर.टी

- डायट के माध्यम से कार्यक्रम का अनुश्रवण करना।
- लर्निंग गैप्स के आधार पर प्रशिक्षण आवश्यकताओं को चिह्नित कर सुधार प्रस्तावित करना ।